PRANAV SHEKHAR
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF ECONOMICS
NOTES FOR BA PART-I

Scanned with CamScanner

Market

वर्तमान परिस्थितियों में बाजार एक प्रवृत्ति है जहाँ वस्तु के क्रेता और विक्रेता एक दूसरे के संपर्क में आते हैं।

यहाँ क्रेताओं का लक्ष्य अपनी संतुष्टि को सर्वोत्तम करना होता है तथा विक्रेताओं का लक्ष्य अपने लाभ को सर्वोत्तम करना। ये विपरित पक्ष (opposite Interest) एक दूसरे से टकराते हैं तथा बाजार में इन विपरित पक्षों का टकराव होता है तथा इन टकराव के फलस्वरूप बाजार में मूल्य का निर्धारण होता है।

बाजार मूलतः दो प्रकार होता है:—

i) Perfect Competition (पूर्ण प्रतियोगिता)

ii) Imperfect Competition

पूर्ण प्रतियोगिता (perfect competition):—

पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत बहुत सारे क्रेता और विक्रेता होते हैं। सारे विक्रेताओं की वस्तु समरूपी होती है। वस्तु के समरूपी होने से उनका मूल्य भी एक स्तर पर निर्धारित होता है। यही मूल्य prevailing Market price (प्रचलित बाजार कीमत) होता है।

पूर्ण प्रतियोगिता में जब बहुत सारे Firm समरूपी वस्तुएँ बेचते हैं तो एक उद्योग (Industry) का निर्माण होता, और

Scanned with CamScanner

पूर्ण प्रतियोगिता में एक firm के माँग वक्र (demand curve) मॉडल और industry के माँग वक्र में कोई अंतर नहीं होता, क्योंकि ये दोनों ही प्रचलित बाजार कीमत (prevailing market price) के अनुरूप होते हैं, जो स्थिर होती है।

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :—

I) क्रेताओं और विक्रेताओं की अधिक संख्या (Large Number of Buyers and Sellers) :— पूर्ण प्रतियोगिता बाजार का वह स्वरूप है, जहाँ क्रेताओं और विक्रेताओं की संख्या बहुत अधिक होती है। क्रेताओं और विक्रेताओं की संख्या बहुत अधिक होने से कोई एक क्रेता या विक्रेता बाजार माँग को प्रभावित नहीं कर सकता। इसके फलस्वरूप पूर्ण प्रतियोगिता में बाजार कीमत स्थिर होती है, इसका तात्पर्य यह है कि इस प्रचलित बाजार कीमत पर कोई भी क्रेता वस्तु की कितनी भी मात्रा खरीद सकता है वहीं कोई विक्रेता भी वस्तु की कितनी भी मात्रा बेच सकता है। अन्य शब्दों में, पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिर कीमत बहुत से क्रेताओं और विक्रेताओं के बाजार में उपस्थित होने का ही परिणाम है।

II) वस्तु का समरूप होना (Homogenous Product) :— पूर्ण प्रतियोगिता की दूसरी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि विभिन्न विक्रेताओं द्वारा

बेची जा रही वस्तु समरूपी होते है। अन्य शब्दों में पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत विक्रेताओं द्वारा बेची जा रही वस्तु रंग, रूप, आकार और गुण में बिल्कुल समान होते है। वस्तुओं के समरूपी होने का परिणाम यह होता है कि कोई भी विक्रेता अपने वस्तु की कीमत प्रचलित बाजार कीमत से ज्यादा नहीं रख सकता है। यदि वह ऐसा करेगा तो उस firm के वस्तु की माँग घट जाएगी और उसके क्रेता अन्य firms की तरफ आकर्षित हो जाएँगे। इसलिए पूर्ण ~~प्रतियोगिता~~ इसका दूसरा परिणाम यह है कि वस्तुओं के पूर्ण स्थानापन्न (perfect substitute) बाजार में उपलब्ध और वस्तु के माँग की लोच अनंत (infinite) है। इसलिए पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत समरूपी वस्तुओं की कीमत प्रचलित बाजार कीमत से ~~प्रभावित~~ ही निर्धारित होती है।

iii) क्रेताओं एवं विक्रेताओं की पूर्ण जानकारी (perfect knowledge have Buyers and Sellers) :- पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत समरूपी वस्तुएँ होने से क्रेता एवं विक्रेता को बाजार की पूर्ण जानकारी होती है। क्रेता जानता है कि सभी विक्रेताओं के पास एक ही तरह की वस्तु उपलब्ध है, वही विक्रेता भी जानता है कि सभी क्रेता एक ही तरह की वस्तु खरीदेंगे। इससे बाजार में एक स्थिरता का

Scanned with CamScanner

माहौल बना रहता है। क्रेता को भी पता रहता है कि उसे प्रचलित बाजार कीमत देनी पड़ेगी सभी विक्रेता भी जानता है कि वह प्रचलित बाजार भाव पर वस्तु को कितनी भी मात्रा बेच सकता है. और इसी उसके लिए कोई विज्ञापन की आवश्यकता नहीं है। पूर्ण प्रतियोगिता के अंदर चूँकि सारे विक्रेता एक समान वस्तु बेच रहे हैं इसलिए विज्ञापन की आवश्यकता नहीं पड़ती। विज्ञापन की आवश्यकता वहीं पड़ती है जहाँ वस्तुओं में विविधता पाई जाती है।

iv) फर्मों को उद्योग में शामिल होने या छोड़ने की स्वतंत्रता (Free Entery and Free Exist) :—
पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत एक Firm को यह स्वतंत्रता रहती है कि वह कभी भी उद्योग में शामिल हो सकता है और कभी भी उसे छोड़कर बाहर निकल सकता है। जब एक Firm पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत सामान्य से अधिक लाभ कमाता है तो अन्य Firm उसके लाभ से आकर्षित होकर उसमें शामिल हो जाते हैं और बाजार विभाजित हो जाता है एवं कुछ फर्मों को नुकसान भी उठाना पड़ता है जो उद्योग छोड़कर बाहर निकल जाते हैं। इस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत एक फर्म को उद्योग में शामिल होने तथा उसे छोड़ने की स्वतंत्रता रहती है एवं एक फर्म अपनी लाभ अथवा हानि की परिस्थिति को देखते हुए उद्योग में शामिल होने तथा छोड़ने

Scanned with CamScanner

का निर्णय लेते हैं।

v) उत्पादन साधनों की पूर्ण गतिशीलता (perfect mobility of factors of production) :— पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत उत्पादन के साधन पूर्णतः गतिशील होते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि उत्पादन के साधन किसी भी फर्म में किसी कार्य करने के लिए स्वतंत्र हैं क्योंकि पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत साधन - कीमत बिल्कुल एक जैसी होती है और उत्पादन के साधन उद्योग में बाजार में शामिल किसी भी फर्म में काम करने के लिए स्वतंत्र होते हैं और यही कार्य करने की स्वतंत्रता, साधन को गतिशील बनाती है।

vi) प्रचलित बाजार कीमत (prevailing market price) :— पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत एक स्थिर प्रचलित बाजार कीमत होती है जिस कीमत पर विक्रेता वस्तु की कितनी भी मात्रा बेच सकता है और क्रेता वस्तु की कितनी भी मात्रा खरीद सकता है। बाजार में सभी वस्तुएँ समरूपी हैं, यदि कोई अपनी वस्तु की कीमत बढ़ा देगा तो क्रेता अन्य फर्मों से उस वस्तु को कम कीमत पर खरीदेंगे एवं उस फर्म की माँग घट जाएगी और उसे हानि का सामना करना पड़ेगा। यदि फर्म अपने वस्तु की कीमत घटा देगा तो वह अन्य फर्मों की कुछ ही क्रेताओं को अपनी ओर आकर्षित कर सकेगा और उसके लिए

Scanned with CamScanner